ABSTRACT

पिछड़ी जातियों के सामाजिक विकास में पंचायतीराज की भूमिका

डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा
समाजशास्त्र विभाग
पंडित रामकिशोर शुक्ल स्मृति शास. कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, ब्यौहारी, शहडोल (म.प्र.)

सारांश

वर्तमान भारतीय समाज अनेक वर्गो में विभक्त है। अपने शुरुआती दौर में भी भारतीय समाज सामाजिक विकास के अनेक वर्गों में विभक्त था। सामाजिक विकास के साथ कुछ समूह अपेक्षाकृत कम विकसित हुये इनके अल्पविकसित होने के कारण इन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं में निरंतर विकास होने से यह समूह निरंतर पिछड़ता गया, इस कारण पिछड़े व अगड़े समूह में समाज विभक्त हो गया पिछड़े समूह अपने विकास के लिये उतने जागृति नहीं हुये जितना होना था। इस कारण समाज में अपना स्थान बनाए रखने के लिए आज काफी संघर्ष करना पड़ रहा है। संघर्ष से कई समस्यायें पैदा होती हैं इन समस्याओं के हल के साथ ही उन्हें सामाजिक विकास भी करना पड़ता है, जिससे समाज में अपने को स्थापित कर सकें। पंचायतीराज व्यवस्था एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो ग्रामीण विकास के साथ गाँव के सभी वर्गो के विकास में सहयोग प्रदान कर रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र पिछड़ी जातियों के सामाजिक विकास में पंचायतीराज की भूमिका के माध्यम से पिछड़ी जातियों में हो रहे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक विकास से संबंधित व्यवस्थाओं को संदर्भ में रखते हुये बारीकी से अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द - *पंचायती राज, सामाजिक विकास, ग्रामीण विकास, पिछड़ी जाति एवं सामाजिक विकास*

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्